INTERNATIONAL JOURNAL OF INDIAN LANGUAGE RESEARCH STUDIES (IJILRS)
(Open Access, Double-Blind Peer Reviewed Journal)
ISSN Online: 3108-1797 ISSN Print: 3139- 3799

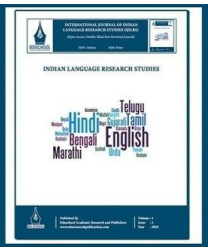

भारतीय लोकसंगीत का डिजिटल संरक्षण: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

Suma M . S

Principle , Hindi club India Foundation , Thrissur, Kerala, India

Article information
Received: 17th March 2026
Received in revised form: 8th April 2026
Accepted: 10th May 2026
Available online: 25th June 2026

Volume: 2
Issue: 2
DOI: https://doi.org/10.63090/IJILRS/3108.1797.0020

सारांश

यह शोध-पत्र भारतीय लोकसंगीत के डिजिटल संरक्षण से जुड़ी समकालीन चुनौतियों और संभावनाओं का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। भारत के पास क्षेत्रीय भाषाओं, समुदायों और अनुष्ठानिक संदर्भों में निहित अत्यंत समृद्ध और विविध लोकसंगीत परंपरा है, किंतु वैश्वीकरण, शहरी पलायन और व्यावसायिक लोकप्रिय संगीत के प्रभुत्व के दबाव में इनमें से अनेक परंपराएँ तेजी से विलुप्त हो रही हैं। डिजिटल प्रौद्योगिकी दस्तावेजीकरण, पहुँच और पुनरुद्धार के सशक्त उपकरण प्रदान करती है, परंतु यह प्रामाणिकता, सांस्कृतिक संदर्भ, बौद्धिक संपदा और प्रस्तुतकर्ता समुदायों के अधिकारों से जुड़े गंभीर प्रश्न भी उठाती है। नृवंशसंगीतशास्त्र, अभिलेखागार सिद्धांत और यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की अवधारणा के आधार पर यह अध्ययन भारतीय लोकसंगीत की विविधता, उसके ह्रास के कारण, वर्तमान संरक्षण प्रयास, तथा डिजिटल संग्रहण के अवसरों और खतरों का मूल्यांकन करता है, और एक समुदाय-केंद्रित नैतिक ढाँचा प्रस्तावित करता है।

Abstract

This research paper analyses the contemporary challenges and possibilities of the digital preservation of Indian folk music. India possesses an extraordinarily rich and diverse tradition of folk music rooted in regional languages, communities, and ritual contexts, yet under the pressures of globalization, urban migration, and the dominance of commercial popular music, many of these traditions are rapidly disappearing. Digital technology offers powerful tools for documentation, access, and revival, but it also raises serious questions of authenticity, cultural context, intellectual property, and the rights of performing communities. Applying frameworks from ethnomusicology, archival theory, and the UNESCO concept of intangible cultural heritage, the study surveys the diversity of Indian folk music, the causes of its decline, existing preservation efforts, and the opportunities and dangers of digital archiving. It proposes a methodological framework and argues that a community centred, ethically grounded, and multidisciplinary approach is essential if digital preservation is to serve the living traditions it seeks to protect rather than to freeze them into lifeless artefacts.

Keywords: - लोकसंगीत, डिजिटल संरक्षण, अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर, नृवंशसंगीतशास्त्र, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, बौद्धिक संपदा

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विरासत का एक अनमोल अंग उसकी विविध और जीवंत लोकसंगीत परंपराएँ हैं। बंगाल के बाउल गीतों से लेकर राजस्थान के मांड और मांगणियार संगीत तक, असम के बिहू से लेकर महाराष्ट्र की लावणी तक, और छत्तीसगढ़ के पंडवानी से लेकर हिमालयी क्षेत्रों के लोकगीतों तक, यह परंपरा भारत की भाषायी और सांस्कृतिक विविधता का दर्पण है।[10]

लोकसंगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह सामूहिक स्मृति, अनुष्ठान, श्रम, ऋतुचक्र और सामाजिक पहचान से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह मौखिक परंपरा का एक रूप है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा और सामुदायिक प्रस्तुति के माध्यम से हस्तांतरित होती है।[1,3]

किंतु आधुनिकीकरण, शहरीकरण और व्यावसायिक लोकप्रिय संगीत के बढ़ते प्रभुत्व के कारण ये परंपराएँ गंभीर संकट में हैं। ऐसी स्थिति में डिजिटल प्रौद्योगिकी संरक्षण का एक नया मार्ग प्रस्तुत करती है। यह शोध-पत्र भारतीय लोकसंगीत के डिजिटल संरक्षण की संभावनाओं और चुनौतियों का व्यवस्थित विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा एक नैतिक संरक्षण ढाँचे का प्रस्ताव करता है।

2. सैद्धांतिक आधार

इस अध्ययन का सैद्धांतिक आधार तीन क्षेत्रों से लिया गया है। पहला, नृवंशसंगीतशास्त्र (Ethnomusicology), जो संगीत को उसके सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ में समझने पर बल देता है। ब्रूनो नेटल और चार्ल्स सीगर जैसे विद्वानों ने यह स्थापित किया कि संगीत को उसके परिवेश से अलग करके पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता। संगीत एक सांस्कृतिक क्रिया है, केवल ध्वनियों का संग्रह नहीं।[1,3]

दूसरा आधार यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर (Intangible Cultural Heritage) की अवधारणा है। 2003 के कन्वेंशन के अनुसार, संगीत और उससे जुड़ी प्रस्तुति परंपराएँ अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर का प्रमुख घटक हैं, जिनका संरक्षण केवल रिकॉर्डिंग नहीं बल्कि उन्हें जीवित रखना और समुदाय की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है।[2]

तीसरा आधार अभिलेखागार सिद्धांत (Archival Theory) है, जो प्रामाणिकता, मेटाडेटा, अंतर-संचालनीयता और दीर्घकालिक पहुँच के सिद्धांतों को रेखांकित करता है। ये तीनों दृष्टिकोण मिलकर लोकसंगीत के डिजिटल संरक्षण के लिए एक समग्र वैचारिक ढाँचा प्रदान करते हैं।[4,7]

3. भारतीय लोकसंगीत की विविधता

भारत में लोकसंगीत की परंपरा अत्यंत विशाल और बहुस्तरीय है। प्रत्येक क्षेत्र, समुदाय और ऋतु के अपने गीत हैं। उत्तर भारत में बिरहा, आल्हा, कजरी और चैती जैसी परंपराएँ प्रचलित हैं। राजस्थान में मांगणियार और लंगा समुदायों का संगीत विश्वप्रसिद्ध है। पंजाब में टप्पा और बोलियाँ, गुजरात में गरबा और भवाई की समृद्ध परंपरा है।[10]

पूर्वी भारत में बंगाल के बाउल फकीरों का रहस्यवादी संगीत और असम के बिहू गीत विशेष महत्व रखते हैं। दक्षिण भारत में विल्लुपाट्टु, सोपान संगीत और अनेक अनुष्ठानिक परंपराएँ हैं। मध्य भारत और आदिवासी क्षेत्रों में संथाली, गोंडी और भीली समुदायों का संगीत प्रकृति, श्रम और सामूहिक जीवन से जुड़ा हुआ है।[8,10]

इस विविधता की एक प्रमुख विशेषता यह है कि अधिकांश परंपराओं में संगीत मौखिक रूप से हस्तांतरित होता है, जिसके लिए कोई मानक लिखित स्वरलिपि नहीं होती। यह मौखिकता ही इस परंपरा की जीवंतता का स्रोत है और साथ ही उसके संरक्षण की सबसे बड़ी चुनौती भी।[1]

4. लोकसंगीत का सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व

लोकसंगीत समुदाय के जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा होता है। विवाह, जन्म, फसल कटाई, ऋतु परिवर्तन और धार्मिक अनुष्ठान सभी अवसरों के अपने विशिष्ट गीत होते हैं। ये गीत समुदाय की सामूहिक स्मृति, इतिहास और मूल्यों को संजोते हैं। श्रम गीत कार्य को सुगम बनाते हैं और सामूहिकता की भावना को मजबूत करते हैं।[3]

लोकसंगीत सामाजिक पहचान का भी प्रतीक है। एक विशिष्ट गीत शैली या वाद्य किसी समुदाय या क्षेत्र की पहचान बन जाता है। इस प्रकार लोकसंगीत केवल कला नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संगठन और सामूहिक ज्ञान का वाहक है। इसका ह्रास केवल एक कला रूप का नहीं, बल्कि एक संपूर्ण जीवन-दृष्टि का ह्रास है।[3]

5. विलुप्ति के कारण

वर्तमान में लोकसंगीत परंपरा कई कारणों से संकटग्रस्त है। सबसे प्रमुख कारण वृद्ध कलाकारों का निधन है, क्योंकि मौखिक परंपरा के वाहक मुख्यतः वृद्ध कलाकार होते हैं और उनके साथ अमूल्य ज्ञान भी समाप्त हो जाता है। युवा पीढ़ी का शहरों की ओर पलायन और पारंपरिक व्यवसायों का त्याग इस संकट को और गहरा करता है।[2]

व्यावसायिक लोकप्रिय संगीत और मीडिया का प्रभुत्व पारंपरिक प्रस्तुति के अवसरों और श्रोताओं को कम कर रहा है। कई कलाकार लोकसंगीत को आर्थिक रूप से अव्यवहार्य मानकर इसे त्याग रहे हैं। साथ ही, सांस्कृतिक आत्म-सम्मान की कमी के कारण कुछ समुदाय अपनी परंपरा को पिछड़ेपन का प्रतीक मानने लगे हैं, जिससे हस्तांतरण की श्रृंखला टूट रही है।

6. वर्तमान संरक्षण प्रयास

भारत में लोकसंगीत के संरक्षण के प्रयास औपनिवेशिक काल से ही होते रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद संगीत नाटक अकादमी, अनेक राज्य लोक कला अकादमियाँ, और ऑल इंडिया रेडियो के अभिलेखागार ने महत्वपूर्ण रिकॉर्डिंग संग्रह तैयार किए। अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज का अभिलेखागार भी इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य है।

हाल के वर्षों में डिजिटल माध्यमों का उपयोग बढ़ा है। विक्रम संपत द्वारा स्थापित "आर्काइव ऑफ इंडियन म्यूज़िक" ने पुराने ग्रामोफोन रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण करके दुर्लभ ध्वनियों को संरक्षित किया है। कुछ गैर-सरकारी संगठन और व्यक्तिगत शोधकर्ता क्षेत्रीय परंपराओं का डिजिटल दस्तावेजीकरण कर रहे हैं।[5]

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एलन लोमैक्स के अभिलेखागार जैसे प्रयास एक प्रेरक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जिन्होंने विश्व भर के लोकसंगीत का व्यवस्थित संग्रह किया। इन प्रयासों से यह स्पष्ट होता है कि व्यवस्थित और दीर्घकालिक संरक्षण संभव है, यदि उचित संसाधन और पद्धति उपलब्ध हो।[9]

7. डिजिटल संरक्षण: संभावनाएँ

डिजिटल प्रौद्योगिकी लोकसंगीत के संरक्षण में कई अभूतपूर्व अवसर प्रदान करती है। उच्च गुणवत्ता की ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग प्रस्तुति की संपूर्णता को संरक्षित कर सकती है, जिसमें स्वर, वाद्य, हाव-भाव, प्रस्तुति का संदर्भ और श्रोताओं की प्रतिक्रिया सभी सम्मिलित होते हैं। यह केवल ध्वनि नहीं बल्कि संपूर्ण सांस्कृतिक घटना को दस्तावेजित करता है।[4]

डिजिटल संग्रह इंटरनेट के माध्यम से वैश्विक पहुँच प्रदान करते हैं, जिससे शोधकर्ता, छात्र और प्रवासी समुदाय अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रह सकते हैं। मेटाडेटा और खोज तकनीकों के माध्यम से विशाल संग्रह को सुव्यवस्थित और सुलभ बनाया जा सकता है।[4,7]

डिजिटल माध्यम बहुविषयक और सहयोगात्मक अनुसंधान को भी संभव बनाते हैं। मानवशास्त्र, भाषाविज्ञान, संगीतशास्त्र और इतिहास के शोधकर्ता एक साझा संसाधन का उपयोग कर सकते हैं। शैक्षणिक उपयोग के लिए ये संग्रह पाठ्यक्रम सामग्री के रूप में भी अमूल्य हैं, जिससे नई पीढ़ी अपनी विरासत से परिचित हो सकती है।[7]

8. डिजिटल संरक्षण की चुनौतियाँ

8.1. तकनीकी चुनौतियाँ

डिजिटल प्रौद्योगिकी तेजी से बदलती है। आज के फाइल फॉर्मेट और सॉफ्टवेयर कुछ वर्षों में अप्रचलित हो सकते हैं। डिजिटल सामग्री को नियमित रूप से नए प्रारूपों में स्थानांतरित करना (माइग्रेशन) महँगा और श्रमसाध्य है। उच्च गुणवत्ता की रिकॉर्डिंग और दीर्घकालिक भंडारण के लिए पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता होती है।[4]

8.2. भाषायी और स्वरलिपि संबंधी चुनौतियाँ

अनेक लोकसंगीत परंपराओं की भाषा या बोली की कोई मानक लिपि नहीं होती। गीतों के बोल का लिप्यंतरण और अनुवाद जटिल कार्य है। साथ ही, लोकसंगीत के सूक्ष्म स्वर और लय को पाश्चात्य या शास्त्रीय स्वरलिपि में पूर्ण रूप से अंकित करना कठिन है, जिससे ऑडियो-प्रथम दृष्टिकोण आवश्यक हो जाता है।[1]

8.3. सांस्कृतिक और नैतिक चुनौतियाँ

लोकसंगीत अपने सांस्कृतिक और अनुष्ठानिक संदर्भ में ही पूर्ण अर्थ रखता है। कुछ गीत पवित्र, गुप्त या विशिष्ट अवसरों तक सीमित होते हैं। ऐसे संगीत को सार्वजनिक डिजिटल मंच पर रखना सांस्कृतिक मानदंडों का उल्लंघन हो सकता है। संदर्भ से अलग करके रिकॉर्ड किया गया संगीत अपना मूल अर्थ खो सकता है।[3,6]

8.4. बौद्धिक संपदा और समुदाय के अधिकार

लोकसंगीत का स्वामित्व प्रायः सामूहिक होता है, किसी व्यक्ति का नहीं। ऐसे में स्वामित्व, सहमति और लाभ-वितरण के प्रश्न जटिल हो जाते हैं। डिजिटल सामग्री का व्यावसायिक दोहन हो सकता है, जिसका लाभ मूल समुदाय तक नहीं पहुँचता। सांस्कृतिक विनियोग का खतरा डिजिटल सुलभता के साथ बढ़ जाता है।[6]

8.5. संसाधन और बुनियादी ढांचे की कमी

उच्च गुणवत्ता का डिजिटल संरक्षण महँगा है और इसके लिए तकनीकी, भाषायी तथा सांस्कृतिक विशेषज्ञता के संयोजन की आवश्यकता होती है। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल साक्षरता की कमी एक अतिरिक्त बाधा है, जिससे डिजिटल विभाजन का खतरा उत्पन्न होता है।[4]

9. एक प्रस्तावित संरक्षण ढाँचा

इन चुनौतियों का समाधान एक सुविचारित पद्धति से ही संभव है। प्रस्तावित ढाँचे का केंद्रबिंदु समुदाय की सक्रिय भागीदारी है। संरक्षण प्रक्रिया के प्रत्येक चरण में, रिकॉर्डिंग से लेकर वितरण तक, समुदाय की सूचित सहमति और निर्णय-भागीदारी आवश्यक है। स्तरीय पहुँच (tiered access) के माध्यम से पवित्र या संवेदनशील सामग्री को उचित सुरक्षा प्रदान की जा सकती है।[6]

तकनीकी स्तर पर ओपन स्टैंडर्ड, समृद्ध मेटाडेटा और नियमित माइग्रेशन की नीति अपनाई जानी चाहिए। बहुमाध्यमिक दस्तावेजीकरण से प्रस्तुति का संदर्भ संरक्षित किया जा सकता है। कानूनी स्तर पर सामुदायिक बौद्धिक संपदा अधिकारों को मान्यता देने वाले विशिष्ट ढाँचे विकसित करने होंगे।[4,6]

10. चुनौतियाँ और समाधान

निम्नलिखित तालिका लोकसंगीत के डिजिटल संरक्षण की प्रमुख चुनौतियों और उनके प्रस्तावित समाधानों को संक्षेप में प्रस्तुत करती है।

तालिका 1. डिजिटल संरक्षण में प्रमुख चुनौतियाँ और समाधान

चुनौती क्षेत्र	प्रमुख समस्याएँ	प्रस्तावित समाधान
तकनीकी	फॉर्मेट अप्रचलन, डेटा हानि	ओपन स्टैंडर्ड, नियमित माइग्रेशन
भाषायी	लिप्यंतरण, स्वरलिपि	ऑडियो-प्रथम, यूनिकोड समर्थन
सांस्कृतिक	संदर्भ हानि, प्रामाणिकता	समृद्ध मेटाडेटा, समुदाय भागीदारी
नैतिक	सहमति, पवित्रता	सूचित सहमति, स्तरीय पहुँच
कानूनी	स्वामित्व, विनियोग	सामुदायिक अधिकार, विशिष्ट कानून
संसाधन	वित्त, विशेषज्ञता	सहयोग, प्रशिक्षण

11. निष्कर्ष

भारतीय लोकसंगीत का डिजिटल संरक्षण एक जटिल किंतु अत्यावश्यक कार्य है। डिजिटल प्रौद्योगिकी निस्संदेह विलुप्त होती परंपराओं को संरक्षित करने और व्यापक पहुँच सुनिश्चित करने की संभावनाएँ प्रदान करती है, किंतु यह केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक आयामों वाला गहन हस्तक्षेप है।

इस शोध के प्रमुख निष्कर्ष हैं: समुदाय-केंद्रित दृष्टिकोण अनिवार्य है, क्योंकि बिना समुदाय की सक्रिय भागीदारी और सहमति के संरक्षण न प्रामाणिक होगा न नैतिक। प्रौद्योगिकी साधन है, साध्य नहीं; इसका उद्देश्य जीवित परंपरा का समर्थन करना है, उसका स्थान लेना नहीं। बहुविषयक सहयोग, दीर्घकालिक प्रतिबद्धता और नीतिगत सुधार आवश्यक हैं।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि लोकसंगीत की गतिशील और जीवंत प्रकृति को डिजिटल माध्यम में कैसे बनाए रखा जाए, यही इस क्षेत्र की मूलभूत चुनौती है। लोकसंगीत हमारी साझा मानवीय विरासत है, जो पहचान, मूल्य, ज्ञान और सौंदर्य का स्रोत है। उसे डिजिटल युग में बचाना और जीवंत रखना हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है।

सन्दर्भग्रन्थसूची

1. Nettl, Bruno. The Study of Ethnomusicology: Thirty-Three Discussions. 3rd ed. Urbana: University of Illinois Press, 2015.
2. UNESCO. Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage. Paris: UNESCO, 2003.

3. Seeger, Anthony. Why Suya Sing: A Musical Anthropology of an Amazonian People. Cambridge: Cambridge University Press, 1987.
4. Lynch, Clifford A. "Digital Collections, Digital Libraries and the Digitization of Cultural Heritage Information." Microform and Imaging Review 31, no. 4 (2002): 131–45.
5. Sampath, Vikram. My Name Is Gauhar Jaan: The Life and Times of a Musician. New Delhi: Rupa Publications, 2010.
6. Christen, Kimberly. "Does Information Really Want to Be Free? Indigenous Knowledge Systems and the Question of Openness." International Journal of Communication 6 (2012): 2870–93.
7. Schreibman, Susan, Ray Siemens, and John Unsworth, eds. A Companion to Digital Humanities. Oxford: Blackwell Publishing, 2004.
8. Babiracki, Carol M. "Tribal Music in the Study of Great and Little Traditions of Indian Music." In Comparative Musicology and Anthropology of Music, edited by Bruno Nettl and Philip V. Bohlman, 69–90. Chicago: University of Chicago Press, 1991.
9. Lomax, Alan. Folk Song Style and Culture. Washington, DC: American Association for the Advancement of Science, 1968.
10. Wade, Bonnie C. Music in India: The Classical Traditions. New Delhi: Manohar, 1987.